AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

CRACK REET 2022-23 SERIES

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा आयोजित

REET 2022-23

5 वर्षों के पेपर्स का विश्लेषण चार्ट का समावेश

संस्कृत भाषा

LEVEL-1 (Part 1 & 2)
(कक्षा 1 से 5 के लिए)

LEVEL-2 (Part 1 & 2)
(कक्षा 6 से 8 के लिए)

- REET के नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार सम्पूर्ण थ्योरी
- NCERT एवं RBSE की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित थ्योरी
- 5 वर्षों के विषयवार सॉल्व्ड पेपर्स (2021, 2017, 2015, 2012 एवं 2011) का समावेश
- 1050+ महत्वपूर्ण प्रश्नों का अध्यायवार संकलन

Best Text book!

इस पुस्तक की थ्योरी REET के पाठ्यक्रम एवं विगत् वर्षों में पूछे गये प्रश्नों पर आधारित है।

इस पुस्तक का गहन अध्ययन करने से आप REET संस्कृत भाषा के प्रश्नों को आसानी से हल कर सकते हैं।

Code	Price	Pages
CB850	₹ 199	244

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा आयोजित

REET 2022-23

संस्कृत भाषा

LEVEL-1 (Part 1 & 2)
(कक्षा 1 से 5 के लिए)

LEVEL-2 (Part 1 & 2)
(कक्षा 6 से 8 के लिए)

Prepared by:

Examcart Experts

AGRAWAL GROUP OF PUBLICATIONS

EduCart | Agrawal Publications | AGRAWAL EXAMCART

Book Name	REET संस्कृत भाषा Paper-1 & 2 (कक्षा 1 - 5 & 6-8)
Editor Name	Rahul Agarwal
Edition	Latest
Published by	Agrawal Group Of Publications (AGP)

© All Rights reserved.
ADDRESS (Head office)	28/115 Jyoti Block, Sanjay Place, Agra, U.P. 282002
CONTACT	quickreply@agpgroup.in We reply super fast
BUY BOOK	www.examcart.in Cash on delivery available
WHATSAPP (Head office)	8937099777
PRINTED BY	Schoolcart
DESKTOP PUBLISHING	Agrawal Group Of Publications (AGP)
ISBN	978-93-5561-253-3
© COPYRIGHT	Agrawal Group Of Publications (AGP)

Disclaimer: This teaching material has been published pursuant to an undertaking given by the publisher that the content does not in any way whatsoever violate any existing copyright or intellectual property right. Extreme care is put into validating the veracity of the content in this book. However, if there is any error found, please do report to us on the below email and we will re-check; and if needed rectify the error immediately for the next print.

ATTENTION

No part of this publication may be re-produced, sold or distributed in any form or medium (electronic, printed, pdf, photocopying, web or otherwise) on Amazon, Flipkart, Snapdeal without the explicit contractual agreement with the publisher. Anyone caught doing so will be punishable by Indian law.

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक के साथ स्पष्ट संविदात्मक समझौते के बिना अमेज़न, फ्लिपकार्ट, स्नैपडील पर किसी भी रूप या माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, मुद्रित, पीडीएफ, फोटोकॉपी, वेब या अन्यथा) में फिर से उत्पादित, बेचा या वितरित नहीं किया जा सकता है। जो कोई भी ऐसा करता हुआ पकड़ा जाएगा, वह भारतीय कानून द्वारा दंडनीय होगा।

AGP contributes Rupee One on every book purchased by you to the **Friends of Tribals Society** Organization for better education of tribal children.

11 जनवरी, 2021 का नवीनतम् पाठ्यक्रम (Syllabus)

संस्कृत

Level-I : कक्षा 1 से 5

- एकम् अपठितं गद्यांशम् आधारीकृत्य निम्नलिखित-व्याकरण-सम्बन्धित: प्रश्ना:
  शब्दरूप-धातुरूप-कारक-विभक्ति-उपसर्ग-प्रत्यय-सन्धि-समास-सर्वनाम-विशेषण-संख्याज्ञानम्-माहेश्वर सूत्राणि अव्ययेषु प्रश्ना:।
- एकम् अपठितं गद्यांशम् राजस्थानस्य इतिहास-कलां-संस्कृति आदिनाम् आधारीकृत्य निम्नलिखित-बिन्दुसम्बन्धित: प्रश्ना:, रेखांकित क्रियापद-चयन-वचन- लकार-लिंग-ज्ञान-प्रश्ना:, विलोम शब्द-लकार परिवर्तन-प्रश्ना: (लट्-लङ्-लृट्-विधिलिङ्लकारेषु)
- संस्कृतानुवाद:, वाच्यपरिवर्तनम् (लट्-लकारस्य) वाक्येषु-प्रश्ननिर्माणम्, अशुद्धि संशोधनम् संस्कृत सूक्तय:।
  (i) संस्कृत भाषा-शिक्षण-विधय:।
  (ii) संस्कृत भाषा-शिक्षण-सिद्धान्ता:।
- संस्कृत भाषा कौशलस्य विकास: (श्रवणम्, सम्भाषणम्, पठनम्, लेखनम्)
  संस्कृताध्यापनस्य अधिगम साधनानि, पाठ्यपुस्तकानि, संप्रेषणस्य साधनानि।
- संस्कृत भाषा-शिक्षणस्य मूल्यांकन-सम्बन्धित: प्रश्ना:, मौखिक-लिखितप्रश्नानां प्रकार सततमूल्यांकनम् उपचारात्मकशिक्षणम्।

Level-II : कक्षा 6 से 8

- एकम् अपठितं गद्यांशम् आधारीकृत्य निम्नलिखित-व्याकरण-सम्बन्धित: प्रश्ना:
  शब्दरूप-धातुरूप-कारक-विभक्ति- उपसर्ग-प्रत्यय-सन्धि-समास-सर्वनाम-विशेष्य-विशेषण-संख्याज्ञानम्-उच्चारणस्थानानि-अव्ययेषुप्रश्ना:।
- एकम् अपठितं गद्यांशम् राजस्थानस्य इतिहास-कलां-संस्कृति आदिनाम् आधारीकृत्य निम्नलिखित-बिन्दुसम्बन्धित: व्याकरणप्रश्ना: रेखांकितपदेषु क्रियापद-चयन-वचन-लकार-लिंग-ज्ञान-प्रश्ना:, विलोम शब्द-लकार परिवर्तन-प्रश्ना: च।(लट्-लङ्-लृट्-लोट्-विधिलिङ्लकारेषु)
- संस्कृतानुवाद:,वाच्यपरिवर्तनम् (लट्-लकारस्य) वाक्येषु-प्रश्ननिर्माणम्, अशुद्धिसंशोधन संस्कृत सूक्तय:।
  (i) संस्कृत भाषा-शिक्षण-विधय:।
  (ii)संस्कृत भाषा-शिक्षण-सिद्धान्ता:।
- संस्कृत भाषा कौशलस्य विकास:,(श्रवणम्, सम्भाषणम्, पठनम्, लेखनम्)
  संस्कृताध्यापनस्य अधिगमसाधनानि,पाठ्यपुस्तकानि, संप्रेषणस्य साधनानि।
- संस्कृत भाषा-शिक्षणस्य मूल्यांकन-सम्बन्धित: प्रश्ना:, मौखिक-लिखितप्रश्नानां प्रकार सतत मूल्यांकनम् उपचारात्मक शिक्षणम्।
- संस्कृत भाषायाम् राजस्थानस्य संस्कृत साहित्यकारा योगदानं सम्बन्धित: प्रश्ना:।

REET (1 to 5 & 6 to 8) के पिछले वर्षों के हल प्रश्न-पत्रों का विश्लेषण चार्ट

संस्कृत (1 to 5)

क्र. सं.	अध्याय का नाम	भाषा	2021	2017	2015	2012	2011
1.	शब्द विचार (सुबंत प्रकरण)	भाषा–I	1	–	–	–	2
		भाषा–II	1	–	–	–	7
2.	व्याकरण: वर्ण परिचय, संज्ञा प्रकरणं	भाषा–I	1	2	–	–	4
		भाषा–II	1	1	2	2	5
3.	वाक्यगत अशुद्धियाँ	भाषा–I	1	1	2	1	4
		भाषा–II	1	1	1	1	2
4.	अव्यय पद	भाषा–I	1	–	–	–	–
		भाषा–II	–	–	–	–	–
5.	कवियों एवं लेखकों की रचनाएँ	भाषा–I	–	–	1	1	–
		भाषा–II	1	1	–	1	–
6.	शब्द विचार	भाषा–I	1	–	–	–	–
		भाषा–II	1	–	1	–	–
7.	धातु रूप एवं वाच्य	भाषा–I	1	1	1	2	10
		भाषा–II	2	1	1	1	5
8.	विलोम शब्द	भाषा–I	1	–	–	–	–
		भाषा–II	–	–	–	–	–
9.	प्रत्यय	भाषा–I	–	–	–	–	2
		भाषा–II	1	–	–	–	–
10.	संधि	भाषा–I	–	–	–	–	4
		भाषा–II	–	–	–	–	3
11.	समास	भाषा–I	–	–	–	–	4
		भाषा–II	–	–	–	–	5
12.	संस्कृत अनुवाद	भाषा–I	1	1	2	2	3
		भाषा–II	1	1	–	1	–
13.	अपठित गद्यांश	भाषा–I	12	15	9	14	–
		भाषा–II	6	5	5	7	–
14.	अपठित पंद्यांश	भाषा–I	–	5	–	–	–
		भाषा–II	6	5	5	7	–
15.	शिक्षणशास्त्र	भाषा–I	10	15	15	10	–
		भाषा–II	9	15	15	10	–
	कुल		**30**	**30**	**30**	**30**	**30**

संस्कृत (6 to 8)

क्र. सं.	अध्याय का नाम	भाषा	2021	2017	2015	2012	2011
1.	शब्द विचार (सुबंत प्रकरण)	भाषा–I	–	–	–	–	6
		भाषा–II	–	–	2	–	6
2.	व्याकरण: वर्ण परिचय, संज्ञा प्रकरणं	भाषा–I	–	–	–	–	5
		भाषा–II	1	–	2	–	–
3.	वाक्यगत अशुद्धियाँ	भाषा–I	1	3	2	–	3
		भाषा–II	1	–	1	–	–
4.	अव्यय पद	भाषा–I	–	–	–	–	–
		भाषा–II	–	–	–	–	–
5.	कवियों–लेखकों की रचनाएँ एवं पुरस्कार	भाषा–I	4	–	–	–	–
		भाषा–II	–	–	–	–	–
6.	शब्द विचार	भाषा–I	–	–	–	1	–
		भाषा–II	1	–	–	–	2
7.	धातु रूप एवं वाच्य	भाषा–I	1	1	1	2	5
		भाषा–II	2	–	1	1	4
8.	विलोम शब्द	भाषा–I	–	–	–	–	–
		भाषा–II	–	–	–	–	–
9.	उपसर्ग–प्रत्यय	भाषा–I	–	–	–	–	2
		भाषा–II	–	–	–	–	3
10.	संधि	भाषा–I	–	–	2	–	4
		भाषा–II	–	–	–	–	3
11.	समास	भाषा–I	–	–	–	–	4
		भाषा–II	–	–	2	–	4
12.	रिक्त स्थानों की पूर्ति	भाषा–I	1	1	1	1	2
		भाषा–II	2	–	1	1	3
13.	संस्कृत अनुवाद	भाषा–I	1	–	1	–	2
		भाषा–II	1	–	–	1	2
14.	अपठित गद्यांश	भाषा–I	12	10	10	7	–
		भाषा–II	–	–	5	7	–
15.	अपठित पद्यांश	भाषा–I	6	–	–	7	–
		भाषा–II	6	–	5	7	–
16.	शिक्षणशास्त्र	भाषा–I	10	15	13	11	–
		भाषा–II	10	–	11	10	–
	कुल		**30**	**30**	**30**	**30**	**30**

विषय-सूची

अध्याय		पृष्ठ संख्या
1.	अपठित गद्यांशः [एकम् अपठितं गद्यांशं, आधारीकृत्य निम्नलिखित व्याकरण–संबंधितः प्रश्नाः, शब्दरूप, धातुरूप, कारक, विभक्ति, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, सर्वनाम, विशेषण, संख्याज्ञानम्, माहेश्वर सूत्राणि, विलोम शब्द, लकार परिवर्तन प्रश्नाः (लट, लङ, लृट, विधिलिंगकारेषु), राजस्थानस्य इतिहास, कला, संस्कृति, अव्ययेषुप्रश्नाः]	1-7
2.	अपठित पद्यांशः [एकम् अपठितं पद्यांशं वा श्लोकम्, राजस्थानस्य इतिहास, कला, संस्कृति, आदिनाम आधारीकृत्य व्याकरण–संबंधितः प्रश्नाः, संधि, समास, कारक, प्रत्यय, छंद, लकार संबंधितः प्रश्नाः, विशेष्य-विशेषण, लिंग संबंधितः प्रश्नाः]	8-11
3.	वर्ण विचार	12-18
4.	शब्दरूप (सुबन्त–प्रकरण)	19-33
5.	धातुरूप	34-48
6.	उपसर्ग	49-52
7.	प्रत्ययः	53-66
8.	सन्धि-प्रकरण	67-80
9.	समास प्रकरणः	81-91
10.	सर्वनाम, विशेषण तथा वाच्य	92-101
11.	विलोम शब्दः	102-112
12.	पर्यायवाची शब्द	113-116
13.	काव्य प्रकरण–रस, छंद व अलंकार	117-128
14.	संस्कृत अनुवाद	129-137
15.	अशुद्धि–संशोधनम्	138-145
16.	संस्कृत सूक्तयः	146-151
17.	संस्कृत भाषा शिक्षण	152-208

विषयवाद सोल्व्ड पेपर्स

1. राजस्थान शिक्षक पात्रता (1-5) परीक्षा, 2021 हल प्रश्न पत्र (परीक्षा तिथि : 26-09-2021) 1-5
2. राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2021 हल प्रश्न पत्र (परीक्षा तिथि : 26-09-2021) 6-10
3. राजस्थान शिक्षक पात्रता (1-5) परीक्षा, 2017 हल प्रश्न पत्र 11-13
4. राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2017 हल प्रश्न पत्र 14-16
5. राजस्थान शिक्षक पात्रता (1-5) परीक्षा, 2015 हल प्रश्न पत्र 17-19
6. राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2015 हल प्रश्न पत्र 20-22
7. राजस्थान शिक्षक पात्रता (1-5) परीक्षा, 2012 हल प्रश्न पत्र 23-25
8. राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2012 हल प्रश्न पत्र 26-29
9. राजस्थान शिक्षक पात्रता (1-5) परीक्षा, 2011 हल प्रश्न पत्र 30-32
10. राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2011 हल प्रश्न पत्र 33-36

अध्याय 1

अपठित गद्यांशः

[एकम् अपठितं गद्यांशं, आधारीकृत्य निम्नलिखित व्याकरण–संबंधितः प्रश्नाः, शब्दरूप, धातुरूप, कारक, विभक्ति, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, सर्वनाम, विशेषण, संख्याज्ञानम्, माहेश्वर सूत्राणि, विलोम शब्द, लकार परिवर्तन प्रश्नाः (लट, लङ, लृट, विधिलिंगकारेषु), राजस्थानस्य इतिहास, कला, संस्कृति, अव्ययेषुप्रश्नाः]

निर्देश (प्रश्न संख्या 1 से 95 तक)

प्रस्तुत गद्यांशम् आधारीकृत्य प्रश्नाः समाधेयाः।

I.गद्यांशः

कि त्वम् जानासि? अन्धकारम् कः नाश्यति? कः दिनानां, रात्रीणां, मासानां, ऋतुनां, वर्षाणां च कारणम् अस्ति? को जगतम् शीतात् रक्षति? इत्यादीनाम् सर्वेषां प्रश्ननाम् एकमेवोत्तरम् अस्ति, भगवान् भास्करः इति। सूर्यः दिनकरः मार्त्तण्डः इत्यादीनां अस्य पर्यायः अस्ति।

अस्य जगतः प्रकाशकः भास्करः अस्ति। अस्योदये तमः नश्यति। अस्य प्रकाशे एव वयं वस्तूनि द्रष्टुम् शक्नुमः। भास्करस्योदये दिनम् भवति, तस्मिन्नस्ते च रात्रिर्जायते। यदि भास्करः न स्यात् दिनमेव न भवेत्। दिनाभावे तु वयं सर्वे अंधः इव भवेम। दीपकानां प्रकाशे तु जगतः सर्वे व्यवहाराः भवितुं न शक्नुवन्ति।

भास्करस्याभावे तु सर्वत्र शैत्यमेव भवेत्। सति शैत्ये जीवानामौषधीनां चोत्पत्तिरेव न स्यात्। एवञ्च संसारस्य स्थितिरेव न स्यात्। पश्याम एव वयं यत् उत्तरदक्षिणयो। ध्रुव प्रदेशयोः भास्करस्य दर्शनं दुर्लभं भवति। अतएव तयोः प्रदेशयोः प्रायः सर्वत्र सर्व वर्षं हिममेव तिष्ठति। तस्मादेव कारणात् तत्राल्पाः एव जना निवसन्ति तथा स्वल्पाः एव पादपाः औषधयः च जायन्ते। फलानामन्नानां तु तत्राभांव एव तिष्ठति।

ऋतूनामपि जनकः भास्करः अस्ति। यदा भास्करः उत्तरायणो भवति तदा तस्य प्रकाशः ऊष्मा च तीव्रा भवतः। तयोः आधिक्यमेव वसंन्तर्तु ग्रीष्मर्तुं चोत्पाद्यति। ग्रीष्मकालस्यातपेन समुद्राणां, नदीनां, सरसां च पयांसि उद्वाष्पितानि भूत्वा आकाशे गच्छन्ति। ततश्चमेघाः जायन्ते। एभिः मेघैरेव वर्षाः भवन्ति। वर्षाभिरेव विविधान्यन्नानि, शाकाः पादपाः च भवन्ति।

1. 'मासानाम्' अत्र का विभक्तिः?

(A) पंचमी (B) षष्ठी

(C) प्रथमा (D) सप्तमी

1. (B) 'मासानाम्' शब्द रूप में षष्ठी विभक्ति बहुवचन है। यथा– मासस्य, मासयोः, मासानाम्।

2. भास्करस्य पर्यायः कः?

(A) शशिकरः (B) दिनकरः

(C) विशाचरः (D) निशाकरः

2. (B) 'भास्कर' का अर्थ है– 'सूर्य'। अधोलिखित विकल्पों में 'दिनकरः' इसका पर्याय शब्द है। इसके और भी पर्याय हैं, जैसे– प्रभाकर, रवि, मरीची, दिनेश, आदित्य आदि।

3. जगतः प्रकाशकः कः अस्ति?

(A) भास्करः (B) मृगांकः

(C) चन्द्रः (D) दीपकः

3. (A) जगतः प्रकाशकः 'भास्करः' अस्ति। अर्थात् भास्कर (सूर्य) के द्वारा ही जगत (संसार) में प्रकाश सम्भव है।

4. ऋतूनामपि जनकः कः अस्ति?

(A) दिवाकरः (B) भास्करः

(C) रविः (D) उपर्युक्त सर्वाः

4. (D) ऋतूनामपि जनकः 'भास्करः' अस्ति। अर्थात् ऋतुओं का जनक भी सूर्य को ही माना जाता है। रविः, दिवाकरः, भास्करश्च यह सभी शब्द पर्याय हैं, इसीलिए 'उपर्युक्त सर्वाः' विकल्प सही होगा।

II. गद्यांशः

भारते अनेकाः पुण्यप्रदाः मङ्गलकारिण्यः नद्यः सन्ति, तासु गङ्गानदी पवित्रतमो कथ्यते। भारतीयजनानां हृदि विश्वासः अस्ति यद् अस्यां नद्यां स्नानेन नरः पापाद् विमुच्यते। गङ्गानदी मुक्तिदायिनी अस्ति। गङ्गानद्याः जलम् औषधिगुणेन युक्तम् अमृततुल्यं भवति। भागीरथी– जाह्नवी– सुरनदी–सुरसरितादीनि गङ्गानद्याः एव नामानि सन्ति। महाराजभगीरथः स्वपूर्वजानाम् उद्धाराय भगवन्तं प्रार्थयत् गङ्गानदीं च पृथिव्याम् आनयत्। ततः प्रभृति एषा भागीरथी इति नाम्ना प्रसिद्धा अभवत्। गङ्गानदी हिमालयस्य गङ्गोत्री नामकस्थानात् उद्गच्छति।

गङ्गानद्याः तटे हरिद्वारं प्रयागः वाराणसी च प्रसिद्धानि तीर्थस्थानानि सन्ति। यत्र जनाः श्रद्धया स्नानं कुर्वन्ति। सायंकाले जनाः नौका-विहारम् अपि कुर्वन्ति। देवदीपावल्यां जनाः प्रज्वलितान् दीपान् नद्याः जले विसृजन्ति। दीपानां प्रकाशेन दृश्यं मनोहरम् अनुपमं च भवति। एवमेव भारते अन्यासामपि नदीनां महत्त्वम् अस्ति। भारतीयाः नदीनां पूजनं देवतारूपेण कुर्वन्ति।

5. पवित्रतमा नदी का अस्ति?

(A) सरस्वती (B) यमुना

(C) गंगा (D) ब्रह्मपुत्र

5. (C) पवित्रतमा नदी 'गंगा' अस्ति। यह नदी हिमालय पर्वत से निकलकर 2525 किलोमीटर की दूरी तय करती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। भारत में इसे 'माँ' सम्बोधन से एवं आस्था पूर्ण रूप से माना जाता है।

6. कस्याः नाम 'सुरसरिता' इत्यस्ति?

(A) सरस्वत्याः (B) भागीरथ्याः

(C) सूर्यसुतायाः (D) यमुनायाः

6. (B) 'भागीरथ्याः' नाम सुरसरिता इत्यस्ति। अर्थात् 'भागीरथी' का नाम सुरसरिता है। गंगा के अनेक पर्यायवाची शब्द हैं, जैसे– भागीरथी, सुरसरिता, जाह्नवी, त्रिपथगा, देवनदी, सुरापगा, सुरसरि आदि।

7. 'वाराणसी' कस्याः तटे अस्ति?

(A) रेवायाः (B) नर्मदायाः

(C) यमुनायाः (D) जाह्नव्याः

7. (D) 'वाराणसी' गंगा (जाह्नव्याः) नदी के तट पर स्थित है।

8. भारतीयाः नदीनां पूजनं केन रूपेण कुर्वन्ति?

(A) जलरूपेण (B) देवतारूपेण

(C) पर्यावरणरूपेण (D) गंगारूपेण

8. (B) भारत के लोग नदियों का पूजन 'देवता रूप' (देवतारूपेण) में करते हैं। इसीलिए नदियाँ भारतीयों की आस्था का प्रतीक हैं।

9. मुक्तिदायिनी का अस्ति?

(A) भागीरथी (B) कालिन्दी

(C) ब्रह्मपुत्र (D) शारदा

9. (A) मुक्तिदायिनी 'भागीरथी' अस्ति। अर्थात् मुक्ति प्रदान करने वाली माँ 'गंगा' (भागीरथी) हैं।

III. गद्यांशः

पञ्चशीलमिति शिष्टाचारविषयकाः सिद्धान्ताः। महात्मा गौतमबुद्धः एतान् पञ्चापि सिद्धान्तान् पञ्चशीलमिति नाम्ना स्वशिष्यान् शास्ति स्म। अतएवायं शब्दः अधुनापि तथैव स्वीकृतः। इमे सिद्धान्ताः क्रमेण एवं सन्ति–

1. अहिंसा। 2. सत्यम्
3. अस्तेयम्। 4. अप्रमादः।
5. ब्रह्मचर्यम् इति।

बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ता आसन्। परमद्य इमें सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्परमैत्रीसहयोगकारणानि, विश्व-बन्धुत्वस्य विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति। राष्ट्रनायकस्यं श्रीजवाहरलालनेहरूमहोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री पञ्चशील-सिद्धान्तानधिकृत्य एवाभवत्। यतो हि उभावपि देशौ बौद्धधर्मे निष्ठावन्तौ। आधुनिके जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिक स्वरूपं गृहीतवन्तः। एवं च व्यवस्थिताः—

1. किमपि राष्ट्रं कस्यचनान्यस्य राष्ट्रस्य आन्तरिकेषु विषयेषु कीदृशमपि व्याघातं न करिष्यति।
2. प्रत्येकराष्ट्रं परस्परं प्रभुसत्तां प्रादेशिकीमखण्डताञ्च सम्मानयिष्यति।
3. प्रत्येकराष्ट्रं परस्परं समानतां व्यवहरिष्यति।
4. किमपि राष्ट्रमपरेण नाक्रंस्यते।
5. सर्वाण्यपि राष्ट्राणि मिथः स्वां स्वां प्रभुसत्तां शान्त्या रक्षिष्यन्ति।

विश्वस्य यानि राष्ट्राणि शान्तिमिच्छन्ति तानि इमान् नियमानङ्गीकृत्य परराष्ट्रैस्सार्द्धं स्वमैत्रीभावं दृढ़ीकुर्वन्ति।

10. पञ्चशीलमिति के सिद्धान्ताः?

(A) अनाचारविषयकाः (B) शिष्टाचारविषयकाः

(C) अशिष्टाचारः (D) कोऽपि न

10. (B) पञ्चशीलमिति शिष्टाचारविषयकाः सिद्धान्ताः।

महात्मा गौतमबुद्ध द्वारा प्रदत्त पञ्चशील सिद्धान्त 'शिष्टाचार विषय' से सम्बद्ध हैं। ये निम्न हैं — (1) अहिंसा (2) सत्यम् (3) अस्तेयम् (4) अप्रमादः (5) ब्रह्मचर्यम् इति।

11. भारत-चीन देशौ कस्मिन् धर्मे निष्ठावन्तौ?

(A) जैनधर्मः (B) सनातन धर्मः

(C) बौद्ध-धर्मे (D) हिन्दू धर्मः

11. (C) भारत एवं चीन देश 'बौद्ध धर्म' में निष्ठावान हैं। पंचशील शब्द ऐतिहासिक बौद्ध अभिलेखों से लिया गया है जो कि बौद्ध भिक्षुओं का व्यवहार निर्धारित करने वाले पाँच निषेध होते हैं इन्हीं के आधार पर 29 अप्रैल 1954 को चीन के क्षेत्र तिब्बत और भारत के बीच व्यापार और आपसी संबंधों को लेकर ये समझौता हुआ था। इसी कारण भारत एवं चीन 'बौद्ध धर्म' में निष्ठावान हैं।

12. गौतम बुद्धस्य सिद्धान्ता कति आसन्?

(A) सप्त (B) षष्ठ

(C) अष्ठ (D) पञ्च

12. (D) गौतम बुद्ध के 'पाँच' सिद्धान्त थे, जिन्हें 'पंचशील सिद्धान्त' कहा जाता है— (1) अहिंसा, (2) सत्यम्, (3) अस्तेयम्, (4) अप्रमादः, (5) ब्रह्मचर्य।

13. गौतम बुद्ध कान् सिद्धान्तान् अशिक्षयत्?

(A) षष्ठशीलमिति (B) पञ्चशीलमिति

(C) त्रयशीलमिति (D) अष्टशीलमिति

13. (B) गौतम बुद्ध ने अपने शिष्यों (भिक्षुओं) को पंचशील सिद्धान्त की शिक्षा दी है। इन नियमों के द्वारा मनुष्य के आचरण में नैतिकता आती है, इसके पालन से मनुष्य का जीवन मंगलमय होता है।

IV. गद्यांशः

महामनस्विनः मदनमोहनमालवीयस्य जन्म प्रयागे प्रतिष्ठित परिवारेऽभवत्। अस्य पिता पण्डितव्रजनाथमालवीयः संस्कृतस्य सम्मान्यः विद्वान आसीत्। अयं प्रयागे एव संस्कृतपाठशालायाम् राजकीयविद्यालये म्योरसेण्ट्रलः महाविद्यालये च शिक्षां प्राप्य अत्रैव राजकीय विद्यालये अध्यापनम् आरब्धवान्। युवकः मालवीयः स्वकीयेन प्रभावपूर्णभाषणेन जनानां मनांसि अमोहयत्। अतः अस्य सुहृदः तं प्राड्विवाकपदवीं प्राप्य देशस्य श्रेष्ठतरां सेवां कर्तुं प्रेरितवन्तः। तदनुसारम् अयं विधिपरीक्षामुत्तीर्य प्रयागस्ये उच्चन्यायालये प्राड्विवाककर्म कर्तुमारंभत। विधेः प्रकृष्टज्ञानेन मधुरालापेन उदारव्यवहारेण चायं शीघ्रमेव मित्राणां न्यायाधीशानाञ्च सम्मानभाजनमभवत्।

महापुरुषाः लौकिक-प्रलोभनेषु बद्धाः नियतलक्ष्यान्न कदापि भ्रश्यन्ति। देशसेवानुरक्तोऽयं युवा उच्च-न्यायालस्य परिधौ स्थातुं नाशक्नोत्। पण्डित मोतीलालनेहरू लालालाजपतरायप्रभृतिभिः अन्यैः राष्ट्रनायकैः सह सोऽपि देशस्य स्वतन्त्रता-संग्रामेऽवतीर्णः। देहल्यां त्रयोविंशतितमे कांग्रेसस्याधिवेशनेऽयम् अध्यक्षपद-मलङकृतवान्। 'रोलट एक्ट' इत्याख्यस्य विरोधेस्य ओजस्विभाषणं श्रुत्वा आङ्ग्लशासकाः भीताः जाता। बहुवारं कारागारे निक्षिप्तोऽपि अयं वीरः देशसेवाव्रतं नात्यजत्।

हिन्दी-संस्कृताङ्ग्लभाषासु अस्य समानः अधिकारः आसीत्। हिन्दी- हिन्दुहिन्दुस्थानानामुत्थानाय अयं निरन्तर प्रयत्नमकरोत्। शिक्षायैव देशे समाजे च नवीनः प्रकाशः उदेति अतः श्रीमालवीयः वाराणस्यां काशीविश्वविद्यालयस्य संस्थापनमकरोत्। अस्य निर्माणाय अयं जनान् धनम् अयाचत् जनाश्च महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमस्मै प्रायच्छन् तेन निर्मितोऽयं विशालः विश्वविद्यालयः भारतीयानां दानशीलतायाः श्रीमालवीयस्य यशसः च प्रतिमूर्तिरिव विभाति। साधारणस्थितिकोऽपि जनः महतोत्साहेन मनस्वितया पौरुषेण च असाधारणमपि कार्यं कर्तुंक्षमः इत्युदर्शयत् मनीषिमूर्धन्यः मालवीयः। एतदर्थमेव जनास्तं महामना इत्युपाधिना अभिधातुमारब्धवन्तः।

महामना विद्वान् वक्ता धार्मिको नेता, पटुः पत्रकारश्चासीत्। परमस्य सर्वोच्चगुणः जनसेवैव आसीत्। यत्र कुत्रापि अयं जनान् दुःखितान् पीड्यमानांश्चापश्यत् तत्रैव सः शीघ्रमेव उपस्थितः सर्वविधं साहाय्यञ्च अकरोत्। प्राणिसेवा अस्य स्वभाव एवासीत्।

अद्यास्माकं मध्येऽनुपस्थितोऽपि महामना मालवीयः स्वयशसोऽमूर्तरूपेण प्रकाशं वितरन् अन्धे तमसि निमग्नान् जनान् सन्मार्गं दर्शयन् स्थाने स्थाने, जने जने उपस्थित एव।

14. श्री मालवीयः कीदृशः पुरुषः आसीत्?

(A) अशिक्षितः (B) कठोरः

(C) मधुरभाषी (D) उदारः

14. (C) मधुरभाषी

15. महामनस्विनः जन्मकुत्र अभवत्?

(A) मयराष्ट्रः (B) प्रयागनगरे

(C) बनारसेः (D) लखनऊ

15. (B) प्रयागनगरे

16. मालवीय महोदयः कस्मिन् वर्षे काँग्रेसस्य अध्यक्षः अभवत्?

(A) विंशः (B) एकोनिवशः

(C) अष्टादशः (D) त्रयोविंशतितमे

16. (D) त्रयोविंशतितमे

17. श्री मालवीयस्य चरित्रे कः सर्वोच्च गुणाः आसीत्?

(A) धनसेवा (B) जनसेवा

(C) विद्वानसेवा (D) मनसेवा

17. (B) जनसेवा

V. गद्यांशः

ममात्यन्तं प्रियं पुस्तकमस्ति श्रीमद्भगवद्गीता। भारतीयधर्मशास्त्रस्य कोशभूतस्य ऐतिहासिक-महाकाव्यस्य, महर्षिणा व्यासेन विरचितस्य महाभारताख्यग्रन्थस्यांशमेकं गीता। तत्र वर्णनानुसारेण ज्ञायते यत् यदा महाभारतनामकं भयंकरं युद्धमायोजितमभूद् कुरुक्षेत्रे तदोभयोः कुरुपाण्डवयोः सेनयोर्मध्ये रथस्थितोऽर्जुनो युयुत्सुनां वीराणामवलोकनायाभ्यर्थितो भगवान् श्रीकृष्णः। सारथित्वे वर्तमानः श्रीकृष्णः सेनयोरुभयोर्विहङ्गमावलोकनं कारयामासार्जुनाय। युयुत्सुवीरान् विलोक्य निरतिशयखिन्नचेतः, व्यामोहेना कुलितान्तःकरणः विवेकहीनः पापमाशङ्कमानः कर्त्तव्याकर्त्तव्यनिर्णय असमर्थः धृतद्वैधीभावकातरः क्षुद्रह्रदयदौर्बल्येनाभिभूतोऽर्जुनः गाण्डीवं भूमौ संस्थाप्य खिन्नचेतसावतस्थे अर्जुनस्य दशामिमां विलोक्य भगवान् श्रीकृष्णोऽर्जुनं प्रबोधयितुं तस्याज्ञानान्धकारं ज्ञानाञ्जनशलाकया दूरीकर्तुं गीताज्ञानामृतमुदगीर्णवान्।

18. 'भारतीय धर्मशास्त्र का कोश' किसे कहा गया है?
(A) वेदव्यास को
(B) धर्मराज युधिष्ठिर को
(C) श्रीकृष्ण को
(D) महाभारत को

18. (D) गद्यांश के अनुसार 'भारतीय धर्मशास्त्र का कोश' महाभारत को कहा गया है। महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास जी हैं।

19. 'वीराणाम् अवलोकनाय' में रेखांकित पद में चतुर्थी विभक्ति करने वाला सूत्र कौन-सा है?
(A) चतुर्थी सम्प्रदाने
(B) कर्मणायमभिप्रैति स सम्प्रदानम्
(C) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

19. (C) 'वीराणाम् अवलोकनाय' पद में 'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति होती है। तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या (वा0) है। जिसका अर्थ है – ''जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाता है उसे प्रयोजन में चतुर्थी होती है।''

20. 'ममात्यन्तं प्रियं पुस्तकमस्ति श्रीमद्भगवद्गीता' वाक्य में रेखांकित पद में प्रथमा विभक्ति करने वाला सूत्र कौन-सा है?
(A) प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा
(B) सम्बोधने च
(C) कर्तृकरणेयास्तृतीया
(D) स्वतन्त्रः कर्ता

20. (A) 'ममात्यन्तं प्रियं पुस्तकमस्ति श्रीमद्-भगवद्गीता' वाक्य में श्रीमद्भगवद्गीता शब्द में 'प्रातिपदिकार्थलिङ्ग-परिमाणवचनमात्रे प्रथमा' सूत्र से प्रथमा विभक्ति हुई है। अर्थात् प्रातिपदिकार्थमात्र में लिङ्गमात्र की अधिकता में, परिमाणमात्र में और संख्यामात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

21. 'आशंकमानः' पद में कौन-सा प्रत्यय है?
(A) शर्तृ (B) कॉनच्
(C) शानच् (D) मनिन्

21. (D) 'आशंकमानः' पद में 'मनिन्' प्रत्यय है। 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' सूत्र से 'मनिन्' प्रत्यय होता है। मनिन् का 'मन्' ही शेष बचता है।

22. 'भगवद्गीता' पद का समास विग्रह बताइए–
(A) भगवतः गीता (B) भगवते गीता
(C) भगवान् गीता (D) भगवता गीता

22. (A) यह व्यंजन सन्धि का उदाहरण है। व्यंजन के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उस व्यंजन में जो रूपान्तरण होता है, उस व्यंजन सन्धि कहते हैं –
भगवद्गीता = 'भगवत् + गीता '

23. 'प्रतिदिनम्' पद का समास विग्रह क्या है?
(A) दिनम् दिनम् (B) प्रत्येकं दिनम्
(C) दिने दिने (D) इनमें से कोई नहीं

23. (B) 'प्रतिदिनम्' में अव्ययीभाव समास होगा, जिसका विग्रह है– 'प्रत्येकं दिनम्'। अव्ययीभाव समास में पूर्व पद प्रधान व अव्यय होता है।

24. निम्नलिखित में से 'लँट् **स्मे**' सूत्र का उदाहरण कौन-सा है?
(A) अहं गच्छामि
(B) कदा आगतोऽसि
(C) मा भवान् भूत
(D) यजति स्म युधिष्ठिरः

24. (D) 'लँट् स्मे' सूत्र का उदाहरण है 'यजति स्म युधिष्ठिरः'। 'लँट् स्मे' सूत्र अष्टाध्यायी के 3 अध्याय के 2 पाद का 118वाँ सूत्र है। यदि लट् लकार के रूप के साथ 'स्म' लगा दिया जाय तो लट् लकार वाले रूप का प्रयोग भूतकाल के लिए हो जायेगा।

25. निम्नलिखित में से 'समवृत्त' कौन-सा है?
(A) पुष्पिताग्रा (B) अपरवक्त्र
(C) अनुष्टुप (D) इनमें से कोई नहीं

25. (C) अनुष्टुप छंद समवृत्त छंद है। अनुष्टुप छंद में चार पाद होते हैं। प्रथम पाद में गुरू, द्वितीय पाद में लघु, तृतीय पाद में गुरू और चतुर्थ पाद में लघु। प्रत्येक आठवें वर्ण के बाद यति होती है।

26. 'सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वे भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु।।'
यह उक्ति किसकी है?
(A) विष्णु शर्मा की
(B) नारायण पण्डित की
(C) आचार्य कौटिल्य की
(D) कालिदास की

26. (D) यह कालिदास द्वारा रचित श्लोक है।

VI. गद्यांशः

महात्मा गांधी अस्मांक राष्ट्रपिता अस्ति। अस्य महापुरुषस्य प्रयासेन एव परतन्त्र भारतवर्षः स्वतन्त्रः अभवत्। अस्य महापुरुषस्य जन्म गुर्जर प्रदेशे पोरबन्दर नामके नगरे अक्टूबर मासस्यद्वि तारिकायां 1869 तमे खिष्टाब्दे अभवत्। तस्य जन्म नाम मोहनदासः आसीत्। तस्य पिता कर्मचन्द गांधी माता च पुतलीबाई आसीत्। बाल्यकाले अयं अति निपुणः न आसीत् परं सत्यप्रियः आसीत्। अस्य प्रारम्भिकी शिक्षा भारते उच्च शिक्षा च इंग्लैण्ड देशे अभवत् विधि शिक्षां प्राप्य सः स्वदेशे प्राड्विवाककर्म कर्तुम् आरभत्। सः शोषितानां दलितानां च उद्धारम् अकरोत्। अयं सत्याग्रह नामकस्य आन्दोलनस्य सफलं प्रयोगं अकरोत्। महात्मा गांधी वर्तमान युगस्य महापुरुषः आसीत्। अयं भारतस्य प्रियः नेता आसीत्। सः सत्याग्रहेण विदेशीयान् जनान् देशात् बहिः निस्सारितवान्। तस्य जीवने सत्यस्य अहिंसायाः च विशेषं महत्वम् आसीत्।

27. हमारे देश के राष्ट्रपिता हैं–
(A) कालिदास
(B) पं. जवाहरलाल नेहरू
(C) महात्मा गांधी
(D) इनमें से कोई नहीं

27. (C) हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हैं। सुभाष चन्द्र बोस के द्वारा सर्वप्रथम गांधी जी को राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया गया।

28. 'परतन्त्रः' का विलोम शब्द है–
(A) परतन्त्रता (B) स्वतन्त्रता
(C) स्वतन्त्रः (D) स्वातन्त्र्यम्

28. (C) 'परतन्त्रः' का विलोम शब्द 'स्वतन्त्रः' है।

29. 'अभवत्' का लकार पुरुष वचन है–
(A) लट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन
(B) लङ्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन
(C) लङ्लकार प्रथम पुरुष एकवचन
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

29. (C) 'अभवत्' भू धातु लङ्लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है।

30. 'अभवत्' का द्विवचन का रूप है–
(A) अभवताम् (B) अभवतम्
(C) अभवत (D) अभवत्

30. (A) 'अभवत्' का द्विवचन का रूप 'अभवताम्' है। यथा– अभवत्, अभवताम्, अभवन्।

31. 'प्राप्य' में प्रत्यय जुड़ा है–
(A) क्त (B) ल्यप्
(C) क्त्वा (D) शानच्

31. (B) 'ल्यप्' का अर्थ 'करके' होता है, इसका प्रयोग भूतकाल में होता है। 'ल्यप्' का 'य' शेष रहता है। 'ल्' और 'प्' हट जाते हैं। जैसे – 'प्राप्य'।

32. 'अकरोत्' का लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है–
(A) करोति (B) कुर्वन्ति
(C) अकुर्वन (D) करोसि

32. (A) 'अकरोत्' शब्द लङ्लकार (भूतकाल) का शब्द है। इसका लट् लगार प्रथम पुरुष एकवचन में 'करोति' रूप बनेगा।

33. विदेशीयान् जनान् देशात् बहिः ..... यहाँ 'जनान्' का विशेषण पद है।
(A) विदेशीयान् (B) देशात्
(C) बहिः (D) जनान्

33. (A) विदेशीयान् जनान् देशात् बहिः ..... यहाँ 'जनान्' का विशेषण पद 'विदेशीयान्' है।

VII. गद्यांशः

महाकविः कालिदासः संस्कृतकवीनां मुकुटमणिरस्ति। न केवलं भारतदेशस्य अपितु समग्रविश्वस्योत्कृष्टकविषु स एकतमोऽस्ति। तस्यानवद्या कीर्तिकौमुदी देशदेशान्तरेषु प्रसृतास्ति। भारतदेशे जन्म लब्ध्वा स्वकविकर्मणा देववाणी–मलङ्कुर्वाणः स न केवल भारतीयः कविः अपि तु विश्वकविरिति सर्वैराद्रियते।

वाग्देवताभरणभूतस्य प्रथितयशसः कालिदासस्य जन्म कस्मिन् प्रदेशे, काले कुले चाभवत्, किञ्चासीत् तज्जन्मवृत्तम् इति सर्वमधुनापि विवादिकोटिं नातिक्रामति। इतरकवय इव कालिदासः आत्मज्ञापने स्वकृतिषु प्रायः धृतमौन एवास्ति। अन्येऽपि कवयस्तन्नामसंकीर्तनमात्रादेव स्वीयां वाचं धन्यां मत्वा मौनमवलम्बन्ते। तथापि अन्तर्बहिस्साक्ष्यमनुसृत्य समीक्षकाः कविपरिचयं यावच्छक्यं प्रस्तुवन्ति।

34. संस्कृत कवियों में कालिदास को कहा गया है–

(A) विद्वान् (B) मुकुटमणिः

(C) मूर्खः (D) इनमें से कोई नहीं

34. (B) दिये गए गद्यांश के अनुसार संस्कृत कवियों में कालिदास को 'मुकुटमणि' कहा गया है। '' महाकविः कालिदासः संस्कृत कवीनां मुकुटमणिरस्ति।''

35. 'देशान्तरेषु' में विभक्ति वचन है–

(A) प्रथमा बहुवचन (B) षष्ठी बहुवचन

(C) सप्तमी बहुवचन (D) सप्तमी एकवचन

35. (C) 'देशान्तरेषु' में सप्तमी विभक्ति बहुवचन है। सप्तमी विभक्ति का क्रम यह है – देशान्तरेः, देशान्तरयोः, देशान्तरेषु।

36. 'एकतम' में प्रत्यय है–

(A) तरप् (B) तमप्

(C) ण्यत् (D) क्त

36. (B) 'एकतम्' में 'तमप्' प्रत्यय है। 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग विशेषण के अंत में उसे उत्तमावस्था में बदलने के लिये होता है।

37. 'अस्ति' में लकार है–

(A) लट्लकार (B) लोट्लकार

(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

37. (A) 'अस्ति' शब्द में लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन है। यथा– 'अस्' (होना) अर्थ में– अस्ति, स्वः सन्ति।

38. 'अधुना' है–

(A) उपसर्ग (B) अव्यय

(C) समास (D) अलंकार

38. (B) 'अधुना' अव्यय शब्द है। अव्यय वे शब्द होते हैं जो शब्द तीनों लिङ्गों, सातों विभक्तियों और तीनों वचनों में एक समान रहते हैं अर्थात् इनमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता।

39. 'अन्येऽपि' में सन्धि है–

(A) यण् सन्धि (B) गुण सन्धि

(C) वृद्धि सन्धि (D) पूर्वरूप सन्धि

39. (D) 'अन्येऽपि' शबद में पूर्वरूप सन्धि है। इसका सन्धि विच्छेद होगा – अन्ये + अपि। पूर्वरूप सन्धि के अनुसार पदान्त में यदि ए/ओ के बाद ह्रस्व 'अ' के रहने पर उसका पूर्वरूप एकादेश (ऽ) हो जाता है। अर्थात् – अन्ये+अपि = अन्येऽपि।

40. 'प्रस्तुवन्ति' में लकार-पुरुष-वचन है–

(A) लोट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन

(B) लट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन

(C) लृट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन

(D) लङ्लकार प्रथम पुरुष एकवचन

40. (B) 'प्रस्तुवन्ति' शब्द में लट्लकार है एवं बहुवचन का रूप है।

41. 'सः न केवलं ..... इति सर्वैराद्रियते' यह वाक्य है।

(A) कर्तृवाच्य का (B) भाववाच्य का

(C) कर्मवाच्य का (D) मिश्रित

41. (C) 'सः न केवलं ..... इति सर्वैराद्रियते' वाक्य कर्मवाच्य का है। सकर्मक धातुओं से ही कर्मवाच्य होता है। इसमें कर्म की प्रधानता होती है। कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा, कर्ता में तृतीया एवं क्रिया कर्म के अनुसार।

VIII. गद्यांशः

संस्कृत विश्वस्य प्राचीनतम भाषा अस्ति। अस्माकं देशस्य समस्तं प्राचीनं साहित्यं संस्कृते एव अस्ति। विश्व साहित्यस्य सर्व प्राचीन ग्रन्थाः चत्वारो वेदाः संस्कृतभाषायामेव सन्ति। पुरा देवानाम् अपि भाषा संस्कृत एव आसीत्। अतएव अस्या नाम सुरभारती, देववाणी, देवभाषा आदि शब्दै कथयन्ति। प्राचीन समये एषैव भाषा सर्वसाधारण भाषा आसीत्। सर्वेजनाः संस्कृतभाषाम् एव अवदन्। संस्कृत साहित्यम् अतीव विशालम् अस्ति। अस्य व्याकरणः पूर्णतः वैज्ञानिकम् अस्ति। इयं भाषा सर्वप्रकारेण सरला, मधुरा च अस्ति। इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च। वेदानां ज्ञानाय संस्कृतस्य अध्ययनम् अति आवश्यकम् अस्ति। रामायण, महाभारत, गीतादयः ग्रन्थाः अस्यामेव भाषायां लिखिताः सन्ति। आधुनिकानां भारतीय भाषाणां जननी संस्कृतभाषा एव अस्ति। भारतीया संस्कृतिः संस्कृत भाषायाम् एव निहिता अस्ति।

42. 'अलंकुर्वाणः' में प्रत्यय है–

(A) शतृ (B) शानच्

(C) ल्यप् (D) ण्यत्

42. (B) 'अलंकुर्वाण' शब्द में 'शानच्' प्रत्यय है। आत्मनेपदी धातुओं के लट् के स्थान पर शानच् होता है। शानच् का 'आन' शेष रहता है।

43. 'प्राचीनतम' में प्रत्यय जुड़ा है–

(A) तरप् (B) ण्यत्

(C) तमप् (D) क्त

43. (C) 'प्राचीनतम्' शब्द में 'तमप्' प्रत्यय जुड़ा है। तमप् का 'तम' शेष रहता है।

44. 'प्राचीनं साहित्यम्' संस्कृते एव अस्ति' में विशेष्य पद है–

(A) प्राचीनं (B) साहित्यम्

(C) संस्कृते (D) अस्ति

44. (B) 'प्राचीनं साहित्यम्' संस्कृते एव अस्ति' में 'साहित्यम्' विशेष्य पद है।

45. प्राचीन काल में सर्वसाधारण की भाषा थी–

(A) संस्कृत (B) प्राकृत

(C) पालि (D) अपभ्रंश

45. (A) प्राचीनकाल में सभी लोग 'संस्कृत भाषा' का प्रयोग करते थे। इसी कारण अनेक देवताओं की स्तुतियाँ संस्कृत भाषा में ही पायी जाती हैं।

46. 'सर्वजनाः संस्कृतभाषाम् एव अवदन्' वाक्य में क्रिया पद का लकार वचन है–

(A) लङ्लकार एकवचन

(B) लोट्लकार एकवचन

(C) लङ्लकार बहुवचन

(D) लट्लकार एकवचन

46. (C) 'सर्वजनाः संस्कृतभाषाम् एव अवदन्' वाक्य में 'अवदन्' क्रियापद है। 'अवदन्' क्रियापद शब्द 'वद्' (बोलना) धातु के लङ्लकार, प्रथम पुरुष का बहुवचन का रूप है। यथा– 'अवदत्, अवदताम्, अवदन्।'

47. 'अवदन्' का एकवचन का रूप है–

(A) वदति (B) वदन्ति

(C) अवदत् (D) वदेत्

47. (C) 'अवदन्' का एकवचन का रूप 'अवदत्' है। यथा– 'अवदत्, अवदताम्, अवदन्।'

48. 'लिखिताः' में प्रत्यय जुड़ा है–

(A) क्त (B) क्तवतु

(C) शतृ (D) शानच्

48. (A) 'लिखिताः' शब्द में 'क्त' प्रत्यय जुड़ा है। 'क्त' प्रत्यय भूतकाल में होता है। क्त कर्मवाच्य या भाववाच्य में होता है। धातु में गुण या वृद्धि नहीं होती। 'क्त' प्रत्यय का 'त' शेष रहता है।

49. 'जननी' का विलोम शब्द है–

(A) जनक (B) सर्जक

(C) चिन्तक (D) भक्षक

49. (A) 'जननी' माता का पर्यायवाची शब्द है, और माता शब्द पिता का विलोम है इसी प्रकार 'जननी' शब्द का विलोम 'जनक' होगा।

50. 'इयं भाषा सरला मधुरा च अस्ति' यहाँ 'इयं' किस लिंग का रूप है?

(A) पुल्लिंग का (B) नपुंसकलिंग का

(C) स्त्रीलिंग का (D) इनमें से कोई नहीं

50. (C) 'इयं भाषा सरला मधुरा च अस्ति' इस वाक्य में 'इयं' शब्द स्त्रीलिंग का है। 'इदम्' (स्त्रीलिङ्ग) सर्वनाम शब्द की प्रथमा विभक्ति में क्रमशः वचनों में –'इयम्, इमे, इमाः' रूप बनते हैं।

IX. गद्यांशः

मेवांड़राज्यं बहूनां शूराणां जन्मभूमिः। तस्य राजा राणाप्रतापः सिंहासनम् आरूढ़वान्। 'हस्तच्युतानां भागानां प्रतिप्राप्तिः कथम्' इति विचिन्त्य सः पुरप्रमुखाणां सभां आयोजितवान्। तत्र सः प्रतिज्ञां कृतवान्। 'चित्तौड़स्थानं यावत् न प्रतिप्राप्स्यामि तावत् सुवर्णपात्रे भोजनं न करिष्यामि। राजप्रसादे वासं न करिष्यामि। मृदुतल्पे शयनम् अपि न करिष्यामि' इति। तदा पुरप्रमुखाः अवदन् 'वयम् अपि सुखसाधनानि त्यक्ष्यामः। देशाय यथाशक्ति धनं दास्यामः अस्मत्पुत्रान् सैन्यं प्रति प्रेषयिष्यामः' इति।

एतदन्तरं ग्रामप्रमुखाः अवदन् 'वयं धान्यागारं धान्येन पूरयिष्यामः। ग्रामे आयुधानि सज्जीकरिष्यामः। युवकान् युद्धकलां बोधयिष्यामः। अद्यैव कार्यारम्भं करिष्यामः' इति। एतत् राणाप्रतापः अवदत् 'यदि वयं सर्वैः सम्भूय कार्यं तर्हि नष्टानि राज्यानि प्रतिप्राप्स्यामः एव। प्रमुखाः वयं यथा व्यवहरिष्यामः तथा जनाः व्यवहरिष्यन्ति।' वयं यथा व्यवहरिष्यामः तथा जानाः व्यवहरिष्यन्ति।

51. 'तस्य राजा राणाप्रतापः सिंहासनम् आरूढ़वान्' अत्र क्रियापदं किम्–

(A) आरूढ़वान् (B) बहुवचनम्

(C) उभयवचनम् (D) एकवचनम्

51. (A) आरूढ़वान्

52. शूराणाम् इति पदे किं वचनम् स्यात्–

(A) द्विवचनम् (B) बहुवचनम्

(C) उभयवचनम् (D) एकवचनम्

52. (B) बहुवचनम्

53. 'करिष्यामि' इति धातो कः लकारः–

(A) लट्लकारः (B) लोट्लकारः

(C) लृट्लकारः (D) विधिलङ्लकारः

53. (C) लृट्लकारः

54. 'साधनानि' इति पदे कः लिङ्गम्–

(A) नपुसंकलिङ्गम् (B) पुल्लिङ्गम्

(C) स्त्रीलिङ्गम् (D) उभयलिङ्गम्

54. (A) नपुसंकलिङ्गम्

55. 'शयनम्' इति पदस्य विलोम पदं किम्–

(A) जाग्रति (B) जागरणम्

(C) सचेतम् (D) अचेतम्

55. (B) जागरणम्

56. दास्यामः इति धातोः लट्लकार रूपं भविष्यति–

(A) ददाति (B) ददासि

(C) दद्वः (D) दह्मः

56. (D) दह्मः

X. गद्यांशः

अस्माकं भारतवर्षः प्राकृतिक सुषमायाः भण्डारो वर्तते। अत्र प्रकृति नहीं प्रतिक्षणं नव्यं भव्यं च नाट्यति। अत्रेकस्मिन् अत्रेकस्मिन् वर्षे षड्ऋतवो भवन्ति–वसन्ते ग्रीष्मः, वर्षा, शरत्, शिशिर, हेमन्तश्च। एषु वसन्तस्यैव प्राधान्यं वर्तते। समागमे वसन्ते नातिशीतं नात्युष्णं वर्तते। साधुः एव ऋतुः ऋतुषु ऋतुराज इति कथ्यते। अस्मिन् ऋतौ वसुन्धरा सुसज्जितं मनोरमं रूपं धारयति।

वसन्ते सौन्दर्यस्याभिनम साम्राज्यं समुल्लसति सर्वे जनाः प्रसन्नाः भवन्ति। वसन्ते कुसुमानां शोभा फलानां समृद्धिः उद्यानेषु दरिदृश्यते तथा क्षेत्रेषु धान्यहि सम्पतिः अवलोक्यते। तस्मिन्नेवसमये कोकिलाः मधुरेण स्वरेण कूजन्ति, कोकिलानां कूजनं अतीव रमणीयं मनोहर प्रतिभाति। वसन्तर्तौ विविधानाम उत्सवानां आयोजनं भवति। संस्कृतसाहित्ये तु प्रकृतिवर्णने वसन्तस्य रमणीयः वर्णनं विविधग्रन्थेषु प्रात्यते। वस्तुतः सर्वासु ऋतुषु वसन्त एवं रमणीयः भवति।

57. 'अत्र प्रकृति नटी प्रतिक्षणं नव्यं भव्यं न नाटयति।' अत्र क्रियापदं किम्।

(A) नाट्यतु (B) नाट्यति

(C) नाट्यताम् (D) नाट्यन्तु

57. (B) नाट्यति

58. सुषमायाः इति पदे किं वचनं स्यात्–

(A) द्विवचनम् (B) बहुवचनम्

(C) कोऽपिनास्ति (D) एकवचनम्

58. (D) एकवचनम्

59. 'धारयति' इति कः लकारः–

(A) लट्लकारः (B) लोट्लकारः

(C) विधिलिङ्लकारः (D) लृट्लकारः

59. (A) लट्लकारः

60. 'फलानाम्' इति पदे किं लिङ्गम्–

(A) पुल्लिङ्गम् (B) स्त्रीलिङ्गम्

(C) उभयलिङ्गम् (D) नपुसंकलिङ्गम्

60. (D) नपुसंकलिङ्गम्

61. ग्रीष्मः इति पदस्य विलोम पदं किम्–

(A) शरद् (B) शिशिरः

(C) वर्षा (D) हेमन्तः

61. (A) शरद्

62. 'भवति' इति धातोः विधिलिङ्लकार रूपं भविष्यति–

(A) भवतु (B) भवेत्

(C) भवेताम् (D) भवेयुः

62. (B) भवेत्

XI. गद्यांशः

कस्मिंश्चित् अरण्ये अनेके पशवः वसन्ति स्म। एकदा पशूनां राजा सिंहः रोगपीड़ितः अभवत्। एकं श्रृगालं विहाय सर्वे पशवः रोगपीड़ित नृपं द्रष्टुमागताः। एकः उष्ट्रः नृपाय एतत् न्यवेदयत् यत् अहङ्कारिणं श्रृगालं विहाय सर्वे भवन्तं द्रष्टुमागताः। एतच्छुत्वा सिंहः क्रोधितोऽभवत्। स्वमित्रैः एतज्ज्ञात्वा श्रृगालः शीघ्रमेव सिंहस्य समीपे प्राप्तः। क्रोधितेन सिंहेन विलम्बेन आगमनकारणं पृष्टः श्रृगालोऽवदत् यदहं तु सर्वप्रथममागन्तुम् ऐच्छम् परं चिकित्साकात् औषध मपि आनेयमिति विचित्यन्त तत्रागच्छम्। तच्छुम्। तच्छुत्वा प्रसन्नः सिंह औषधविषये पृष्टवान्। श्रृगालः अवदत् औषधं तु न दत्तं परं कृपापरो भूत्वा सः चिकित्साक्रमम उक्वान् यत् उष्ट्रस्य रक्तपोननैव रोगस्य शान्तिः भविष्यति। तदा सिंहः पीतवान् एवं स्वपिशुनतायाः दुष्फलम् उष्ट्रेण स्वयमेव प्राप्तम्।

63. 'एकदा पशूनां राजा सिंहः रोगपीड़ित अभवत्।' अत्र क्रियापदं किम्–

(A) भवति (B) अभवत्

(C) भविष्यति (D) अभवन्

63. (B) अभवत्

64. पशवः इति पदे किं वचनं स्यात्–

(A) एकवचनम् (B) द्विवचनम्

(C) बहुवचनम् (D) उभयवचनम्

64. (C) बहुवचनम्

65. 'ऐच्छम्' इति धातोः कः लकारः–

(A) लड्लकार (B) लट्लकार

(C) लृटःलकार (D) लोट्लकार

65. (A) लड्लकार

66. 'उष्ट्रः' इति पदे कः लिङ्गम्–

(A) पुल्लिङ्गम् (B) स्त्रीलिङ्गम्

(C) नपुसकलिङ्गम् (D) न कोऽपि

66. (A) पुल्लिङ्गम्

67. 'क्रोधितः' इति विलोमपद किम्–

(A) प्रसन्नः (B) अक्रोधितः

(C) रुष्टः (D) खिन्नः

67. (A) प्रसन्नः

68. 'अगच्छम्' इति धातोः लोट्लकाररूपं भविष्यति–

(A) गच्छति (B) गच्छताम्
(C) गच्छानि (D) गच्छन्तु

68. (C) गच्छानि

XII. गद्यांशः

दीपावली अस्माकं राष्ट्रियोत्सवः वर्तते। अस्मिन् उत्सवे सर्वे जनाः परस्परं भेदभावं विस्मृत्य आनन्दमग्नाः भवन्तिः त्रेतायुगे कैकेण्याः वरयाचनात् अयोध्यायाः राजा दशरथेन रामाय चतुर्दशानां वर्षाणां वनवासः प्रदत्तः। श्रीरामः अस्मिन् एवं दिने सीतालक्ष्मणाभ्यां सह अयोध्यां प्रत्यावर्तितवान्। तान् स्वागत व्याहर्तुम् अयोध्यावासिनः नगरे सर्वत्र दीपान प्रज्वालितवन्तः। तदा आरम्भ अद्यावधिः प्रतिवर्ष कार्त्तिकमासे अमावस्यायां तिथौ भारते दीपावली–मोहत्सवः महता उत्साहेन आयोजितः भवति।

दीपावल्यां जनाः गृहाणि परिष्कुर्वन्ति। अस्मिन्मवसरे ते स्वमित्रेभ्यः बन्धुभ्यश्च उपहारान् यच्छन्ति।

69. 'सर्वे जनाः परस्परं भेदभावं विस्मृत्य आनन्दमग्नाः भवन्ति।' अत्र क्रियापदं किम्–
(A) भवति (B) भवन्ति
(C) भवन्तु (D) भवथ

69. (B) भवन्ति

70. 'राजा' इति पदे किं वचनं स्यात्–
(A) एकवचनम् (B) द्विवचनम्
(C) बहुवचनम् (D) न कोऽपि

70. (A) एकवचनम्

71. 'वर्तते' इति धातोः कः लकारः
(A) लोट्लकार (B) लट्लकार
(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

71. (B) लट्लकार

72. 'रामाय' इति पदे कः लिङ्गम्–
(A) पुल्लिङ्गम् (B) स्त्रीलिङ्गम्
(C) नपुंसंकलिङ्गम् (D) न कोऽपि

72. (A) पुल्लिङ्गम्

73. आनन्दमग्नाः इति विलोमपदं किम्–
(A) हर्षः (B) उल्लासः
(C) प्रसन्नः (D) शोकमग्नाः

73. (D) शोकमग्नाः

74. 'भवति' इति धातोः लृटलकारस्य रूपं किम् भवति–
(A) भविष्यसि (B) भविष्यति
(C) भविष्यामि (D) भविष्यतः

74. (B) भविष्यति

XIII. गद्यांशः

अस्माकं राजस्थानं वीराणां जनकं वर्तते। त्यागेन बलिदानेन च पूता अस्य भूमिः प्रणम्याः कवयः अपि काव्येषु अस्या गौरव–गीतानि गायन्ति। राजस्थानस्य वीराणां देशरक्षायै स्वाभिमानं रक्षयितुञ्च कृत्तमात्मोत्सर्गं सगर्वं वंदन्ति इतिहास–विदः। राजस्थानस्य सभ्यतायाः उभ्दवः विकासश्च अतिप्राचीनो वर्तते। कालीबंगा आहड़ादि स्थानेषु कृतेन उत्खनेन अस्याः सभ्यतायाः अस्तित्वं मोहनजोदड़ो हड़प्पादि सभ्यतानां समकालिकं सिध्यति। पुरातात्विकसाक्ष्यैः सिद्धयति यत् लक्ष वर्षेभ्यः प्राक् राजस्थानस्य दक्षिण भागे च बनास गम्भीरी वेडचादि नदीनां च तटेषु निवासिनो मानवाः प्रस्तर युगस्य आयुधैः मृगयां कुर्वन्ति स्म। जीवनोपयोगि कार्येषु तेषामायुधानां उपयोगं कुर्वन्ति स्म। प्रस्तर सभ्यतायाः चिह्ननि चर्मण्वत्यादि नदीनां समीपे समुपलब्धानि। ऋग्वेदानुसारं राजस्थानीय गंगानगर मण्डलस्य पूर्वस्यां सीमायां दृषद्वती सरित् वहति स्म, प्रतीच्यां च सरस्वती नदी अवहत्। तस्मिन् समये अयं भू भागः ब्रह्मावर्त नाम्ना कथ्यते स्म। पोषाण युगस्य तिसृणां संस्कृतीनां बोधः प्रामुख्येन भवति।

75. 'प्रणम्याः' अत्र कः प्रत्ययः
(A) क्तः (B) क्यप्
(C) ण्यत् (D) यत्

75. (D) यत्

76. 'राजस्थानम्' अत्र कः समासः
(A) बहुव्रीहिः (B) तत्पुरुषः
(C) अव्ययीभावः (D) कर्मधारयः

76. (B) तत्पुरुषः

77. वीराणां जनकं वर्तते?
(A) राजस्थानम् (B) महाराष्ट्रम्
(C) उत्कलप्रदेशम् (D) उत्तरप्रदेशम्

77. (A) राजस्थानम्

78. 'अस्या गौरवगीतं गायन्ति' अत्र क्रियापदं विधिलिङ्ग लकारे परिवर्तयत–
(A) गायेताम् (B) गायन्ते
(C) गायेन्ते (D) गायेयुः

78. (D) गायेयुः

79. 'सुविचार्यः' अत्र कति उपसर्गाः सन्तिः?
(A) एकः (B) द्वौ
(C) चत्वारि (D) त्रीणी

79. (B) द्वौ

80. पाञ्चवर्षिकी योजनां किमर्थं निर्माति?
(A) राष्ट्रविकासाय (B) स्वविकासाय
(C) ग्रामविकासाय (D) खण्डविकासाय

80. (A) राष्ट्रविकासाय

81. 'सहयोगेन' अत्र का विभक्तिः?
(A) षष्ठी (B) तृतीया
(C) पञ्चमी (D) चतुर्थी

81. (B) तृतीया

82. 'विकासगतिः अत्र विग्रहः?
(A) विकासस्य गति (B) विकासे गतिः
(C) विकाशाय गतिः (D) विकासेन गतिः

82. (A) विकासस्य गति

83. 'सफलयितुञ्च प्रतिपलं प्रयतते।' अत्र क्रियापदं विधिलिङ्गलकारे परिवर्तयत–
(A) प्रयन्ते (B) प्रयतताम्
(C) प्रयतेत (D) प्रयेताम्

83. (C) प्रयतेत

XIV. गद्यांशः

मरुभूमिः राजस्थानं न केवलं वीराणां भक्तानां च भूमिः अस्ति, अपितु विदुषां महाकवीनाम् अपि भूमिः अस्ति। संस्कृतसाहित्ये 'बृहत्त्रयी' इति नाम्ना प्रसिद्धानि त्रीणि महाकाव्यानि सन्ति–भारविकवेः 'किरातार्जुनीयम्' माघस्य 'शिशुपालवधम्' श्रीहर्षस्य च. 'नैषधीयचीरितम्'। महाकवेः माघस्य जन्म राजस्थानस्य जालौर–जनपदान्तर्गते भीनमालनगरे श्रीमालीब्रह्मणपरिवारे अभवत्। भीनमालनगरस्य पुरातनं नाम 'भिन्नमाल' इति आसीत्। श्रीमालीब्राह्मणानां बाहुल्यात् अस्य क्षेत्रस्य अपरं नाम 'श्रीमालक्षेत्रम्' अपि आसीत्।

84. राजस्थानं केषां भूमि अस्ति?
(A) अभिनेतृणाम् (B) राजनेतणाम्
(C) वीराणाम् (D) नायकानाम्

84. (C) वीराणाम्

85. 'साहित्ये' अत्र का विभक्तिः?
(A) तृतीया (B) सप्तमी
(C) पञ्चमी (D) षष्ठी

85. (B) सप्तमी

86. श्रीहर्षस्य महाकाव्यं किम्?
(A) नैषधीयचरितम् (B) किरातार्जुनीयम्
(C) रघुवंशम् (D) शाकुन्तलम्

86. (A) नैषधीयचरितम्

87. राजस्थानस्य कविः कः?
(A) भवभूतिः (B) श्रीमाघः
(C) सुबन्धुः (D) कलिदासः

87. (A) भवभूतिः

88. 'बृहत्त्रयी' नाम्ना किं काव्यं प्रसिद्धम्?
(A) शाकुन्तलम्
(B) कुमारसंभवम्
(C) शिशुपालवधम्
(D) रघुवंशम्

88. (B) कुमारसंभवम्

XV. गद्यांशः

माधवस्य पत्नी जलेन पूरितं घटं शिरसि धृत्वा गृहम् आगच्छति। तस्याः पादध्वनिं श्रुत्वा नकुलः द्वारे

आगच्छति। हर्षितः नकुलः स्वामिन्याः पादयोः द्वारे आगच्छति। हर्षितः नकुलः स्वामिन्याः पादयोः लुठति। तस्य रक्तश्ज्जतं मुखं दृष्ट्वा सा चिन्तयति–एषः दुष्टःमम पुत्रं खादितवान्। अतएव कोपात् सा जलघटं नकुलस्य उपरि पातयति। नकुलः मृतः। शीघ्रं सा गृहाभ्यन्तरे आगच्छति, तत्र पश्यति–तस्याः पुत्रः सुखेन शयनं करोति। समीपे खण्डशः कृष्णसर्पः मृतः अस्ति। सा सत्यं ज्ञातवती। उपकारं नकुलं मतृ दृष्ट्वा सा दुखिता जाता। अतएव उच्यते–सहसा विदधीत न क्रियाम्। अर्थात् अकस्मात् अविचार्य किम् अपि कार्य न करणीयम्।

89. कस्य पत्नी गृहमागच्छति–

(A) रामस्य (B) गणेशस्य
(C) माधवस्य (D) गौरवस्य

89. (C) माधवस्य

90. 'श्रुत्वा' अत्र कः प्रत्ययः?

(A) त्व (B) क्त्वा
(C) तुमुन् (D) त्यण्

90. (B) क्त्वा

91. 'तस्याः' इति का विभक्तिः?

(A) प्रथमा (B) षष्ठी
(C) चतुर्थी (D) सप्तमी

91. (B) षष्ठी

92. 'स्वामित्याः पादयोः कः लुठति।'?

(A) नकुलः (B) ब्राह्मणः
(C) सर्पः (D) पुत्रः

92. (A) नकुलः

93. 'सक्तरजिञ्जतम्' अत्र समास विग्रहः कः?

(A) रक्तैः रञ्जितम्
(B) रक्तेन रञ्जितम्
(C) रक्तात् रञ्जितम्
(D) रक्ताय रञ्जितम्

93. (B) रक्तेन रञ्जितम्

94. 'रञ्जितम्' अत्र सन्धिविच्छेद :?

(A) रङ्+जितम् (B) रम्+जितम्
(C) ए+जितम् (D) रं+जितम्

94. (D) रं+जितम्

95. 'स+सत्यं ज्ञातवती' अत्र सर्वनाम पदं किम्?

(A) ज्ञातवती (B) सत्यम्
(C) सा (D) नास्ति

95. (C) सा

❑❑

राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2011
हल प्रश्न-पत्र
संस्कृत भाषा

भाषा-I

1. 'वं' व्यञ्जनस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति
(A) कण्ठोष्ठम् (B) कण्ठ–तालु
(C) दन्तोष्ठम् (D) जिह्वामूलम्

1. (C) वं वर्ण का उच्चारण स्थान दन्तोष्ठ होता है। इसका सूत्र व कारस्य दन्त्योष्ठम् है। वं को द्विस्थानीय व्यंजन भी कहा जाता है।

2. तवर्गस्य उच्चारणस्थानं भवति
(A) नासिका (B) मूर्धा
(C) कण्ठः (D) दन्ताः

2. (D) त वर्ग का उच्चारण स्थान दन्त है। लृतुल सानाम् सूत्र से लृ त वर्ण ल, स का उच्चारण दन्त होता है।

3. 'अ' स्वरस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति
(A) ओष्ठौ (B) कण्ठः
(C) दन्ताः (D) मुखम्

3. (B) अ वर्ण का उच्चारण स्थान कण्ठ होता है। अकुहविसर्जनीयानाम् सूत्र से अ, आ क वर्ग है और विसर्ग (अः) का उच्चारण स्थान कण्ठ होता है। अ के 18 भेद होते हैं।

4. 'मूर्धा' उच्चारणस्थानम् अस्ति
(A) वकारस्य (B) षकारस्य
(C) ककारस्य (D) पकारस्य

4. (B) ष का उच्चारण स्थान मूर्धा होता है। ऋतुरषाणाम् मूर्धा सूत्र से ऋ ट वर्ग र ण का उच्चारण स्थान मूर्धा होता है।

5. 'हरि' शब्दस्य द्वितीया विभक्ति बहुवचने रूपं भवति
(A) हरिम् (B) हरी
(C) हरिन् (D) हरीन्

5. (D) हरि शब्द का द्वितीया बहुवचन हरीन् होगा हरि इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द है। इसके द्वितीया विभक्ति के रूप क्रमशः तीनों वचनों में हरिम् हरी हरीन् होते हैं।

6. 'नदी' शब्दस्य चतुर्थी विभक्ति एकवचने रूपं भवति
(A) नदीम् (B) नद्या
(C) नद्यै (D) नद्याम्

6. (C) नदी शब्द का चतुर्थी विभक्ति का एकवचन का रूप नद्यैः होता है। नदी ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द है। इसके चतुर्थी विभक्ति के रूप क्रमशः नद्यैः नदीभ्याम् नदीभ्या होते हैं।

7. 'कस्माद्' इति रूपमस्ति
(A) द्वितीया विभक्ति – एकवचनस्य
(B) तृतीया विभक्ति – एकवचनस्य
(C) चतुर्थी विभक्ति – एकवचनस्य
(D) पंचमी विभक्ति – एकवचनस्य

7. (D) कस्माद् पंचमी विभक्ति एकवचन का रूप है। इसका मूल शब्द किम् (क्या) होता है।

8. 'एकस्मै बालकाय फलं यच्छ' रेखांकित पदे विभक्तिः अस्ति
(A) प्रथमा (B) द्वितीया
(C) तृतीया (D) चतुर्थी

8. (D) एकस्मै चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है।

9. 'सर्वे बालकाः जलं पिबन्ति।' रेखांकितं पदमस्ति
(A) प्रथमपुरुषस्य एकवचनम्
(B) प्रथमपुरुषस्य बहुवचनम्
(C) मध्यमपुरुषस्य बहुवचनम्
(D) उत्तमपुरुषस्य एकवचनम्

9. (B) सर्वे बालकाः जलं पिबन्ति में पिबन्ति पद प्रथम पुरुष बहुवचन लट्लकार का है।

10. 'स्था' धातोः लट्लकारे मध्यमपुरुषस्य बहुवचने रूपं भवति
(A) स्थास्यसि (B) स्थास्यथ
(C) तिष्ठथः (D) तिष्ठथ

10. (D) स्था धातु मध्यम पुरुष बहुवचन का लृट लकार का रूप तिष्ठथ होगा।

11. 'लभ्' धातोः लोट् लकारे उत्तमपुरुष बहुवचनं भवति
(A) लभन्ताम् (B) लभै
(C) लभावहै (D) लभामहै

11. (D) लभ धातु का लोट् लकार का उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप लभाम है होगा।

12. 'वयम् आत्मानं जयेम।' रेखाङ्कितपदम् अस्ति
(A) विधिलिङ्लकारस्य मध्यमपुरुष बहुवचनम्
(B) विधिलिङ्लकारस्य उत्तमपुरुष बहुवचनम्
(C) विधिलिङ्लकारस्य उत्तमपुरुष एकवचनम्
(D) विधिलिङ्लकारस्य प्रथमपुरुष एकवचनम्

12. (B) जयेम शब्द विधिलिङ्ग लकार उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है। धातु के रूप निम्न हैं :

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
म.पु.	जयेः	जयेतम्	जयेत
उ.पु.	जयेभम्	जयेव	जयेम्

13. सः.....बधिरः। अत्र रिक्तस्थाने शुद्धरूपं भविष्यति
(A) कर्णाय (B) कर्णेन
(C) कर्णात् (D) कर्णस्य

13. (B) सः कर्णेन बधिरः शुद्ध रूप होगा। ये नाङ्ग विकार सूत्र से तृतीया विभक्ति का प्रयोग होगा।

14. रामः **मूर्खेण** ईर्ष्यति। रेखाङ्कितपदे शुद्धरूपं भविष्यति
(A) मूर्खम् (B) मूर्खाय
(C) मूर्खात् (D) मूर्खस्य

14. (B) राम मूर्खाय ईर्ष्यति शुद्ध वाक्य होगा। क्रुध द्रुहेर्ष्यासूयानाम् यं प्रति कोप सूत्र से ईर्ष्या करने के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

15. सीता जनकं सह विद्यालयं गच्छति। रेखाङ्कितपदे शुद्धरूपमस्ति
(A) जनकेन (B) जनकाय
(C) जनकात् (D) जनकस्य

15. (A) सीता जनकेन सह विद्यालयं गच्छति/ सहयुक्ते प्रधाने सूत्र से सह, सद्धिम् साकम् समम् शब्दों के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

16. 'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधा' योगे विभक्तिः भवति
(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) चतुर्थी (D) पंचमी

16. (C) नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा/ अलम् बष्ट योगाच्च सूत्र से चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

17. 'राजपुरुषः' अस्मिन् पदे समासः अस्ति
(A) अव्ययीभावः (B) तत्पुरुषः
(C) कर्मधारयः (D) द्वन्द्वः

17. (B) राजपुरुषः में तत्पुरुष समास होता है। तत्पुरुष समास का दूसरा पद प्रधान होता है। जिसे उत्तर पद प्रधान होता है। इसका सूत्र प्रायेणोत्तर पद प्रधान होता है। राजपुरुष का समास विग्रह राज्ञः पुरुष होगा यो षष्ठी तत्पुरुष के अन्तर्गत आता है।

18. 'घनश्यामः' अस्य समासस्य विग्रहः अस्ति
(A) घनः च श्यामः च (B) घन इव श्यामः
(C) श्यामः इव घनः (D) घने श्यामः

18. (B) घनश्यामः पद में कर्म धारय समास होता है। विशेषं विशेष्येण बहुलम् सूत्र से कर्म धारय समास का पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है। इसका समास विग्रह घनः इव श्यामः होगा। इसमें उपमान उपमेय के कारण कर्मधारय समास है।

19. 'त्रिभुवनम्' अत्र समासः अस्ति
(A) कर्मधारयः (B) तत्पुरुषः
(C) बहुव्रीहिः (D) द्विगुः

19. (D) त्रिभुवनम् पद में द्विगु समास है।
संख्यापूर्वी द्विगुः सूत्र से द्विगु समास का पहला पद संख्या वाची होता है। त्रिभुवन पद का समास विग्रह त्रयाणां भुवनानाम् समाहारः होता है।

20. प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो समासः भवति
(A) द्वन्द्वः (B) तत्पुरुषः
(C) द्विगुः (D) बहुव्रीहिः

20. (A) प्रायेणोभयो पद प्रधानः द्वन्द्व समास होता है। द्वन्द्व समास के उभयपद अर्थात् दोनों पद प्रधान होते हैं। जबकि बहुव्रीहि समास के दोनों पद अप्रधान होते हैं।

21. 'चयनम्' अस्य शब्दस्य संधिविच्छेदः अस्ति
(A) च + अयनम् (B) चि + अयनम्
(C) चे + अयनम् (D) चे + यनम्

21. (C) चयनम् पद का सही सन्धि विच्छेद चे + अनम् होगा जो किसी भी विकल्प में परिलक्षित नहीं होता। इसलिए विकल्पानुसार चे + अयनम् पद सही माना जायेगा। एयोऽयवाआवः सूत्र से चयनम् पद में अयादि सन्धि है।

22. 'देव + ऐश्वर्यम्' अत्र संधिः भविष्यति
(A) देवेर्श्यम् (B) देवैर्श्यम्
(C) देवर्श्यम् (D) देवऽवर्यम्

22. (B) देव + ऐश्वर्यम् पद का सन्धि युक्त पद देवैश्वर्यम् होगा।
वृद्धिरेचि सूत्र से अ + ऐ मिलकर ऐ का निर्माण करेंगे।

23. 'पेष्टा' अत्र संधिः अस्ति
(A) श्चुत्व (B) ष्टुत्व
(C) जशत्व (D) पूर्वरूप

23. (B) पेष्टा पद में ष्टुत्व सन्धि है। स्तोसुना स्तुः सूत्र से स्/त वर्ग के बाद ष्/ट वर्ण का कोई व्यंजन आता है। तब उसे ष्टुत्व सन्धि कहा जाता है। पेष्टा का सन्धि विच्छेद पेष् + ता होगा।

24. 'शिवोऽर्च्यः' अत्र संधिविच्छेदः अस्ति
(A) शिवः + अर्च्यः (B) शिवा + अर्च्यः
(C) शिवि + अर्च्यः (D) शिव + आर्च्यः

24. (A) शिवोऽर्च्यः पद में पूर्व रूप सन्धि है। इसका विच्छेद शिवो + अर्च्य होता है, परन्तु विकल्पानुसार शिवः + अर्च्य पद सही होगा तथा इसमें विसर्ग सन्धि होगी।

25. दुर्जनः सज्जनस्य <u>अपकरोति</u>। रेखाङ्कितपदे उपसर्गः धातुश्च स्तः
(A) अप + कृ (B) अपा + कृ
(C) अप + कर् (D) अपा + कर्

25. (A) अपकरोति पद में अप उपसर्ग है तथा कृ धातु है इसलिए अप् + कृ सही रूप है।

26. सीता स्नानं <u>कृत्वा</u> देवालयं गच्छति।
रेखांङ्कितपदे धातुः प्रत्ययश्च स्तः
(A) कृ + क्त्वा (B) कृ + ल्यप्
(C) क्री + तुमुन् (D) क्री + क्त्वा

26. (A) कृ धातु में क्त्वा प्रत्यय लगाने से कृ + क्त्वा = कृत्वा पद बनता है। क्त्वा प्रत्यय भूतकाल में प्रयोग किया जाता है। इससे बने पद अव्यय होते हैं। क्त्वा प्रत्यय का क् छिप जाता है त्वा/ट्वा शेष बचता है।

27. 'कथयितुम्' अत्र धातुः प्रत्ययश्च स्तः
(A) कथ् + तुमुन् (B) कथ् + ल्यप्
(C) कथय् + तुमुन् (D) कथि + ल्यप्

27. (A) कथयितुम् पद में कथ् धातु और तुमुन् प्रत्यय हैं। कथ् + तुमुन्
तुमुन् प्रत्यय के लिए के अर्थ में लृट लकार में प्रयोग किया जाता है।

28. पवनः.....वहति। रिक्तस्थाने अव्ययस्य शुद्धरूपं भविष्यति
(A) कुत्रम् (B) कुत्र
(C) कुत्रा (D) कुत्रे

28. (B) पवनः कुत्र वहति। रिक्त स्थान में कुत्र शब्द का प्रयोग होगा।

29. "गोपाल मोहन से चतुर है" इत्यस्य संस्कृतानुवादः अस्ति
(A) गोपालस्य मोहनः चतुरतरः
(B) गोपालः मोहनेन चतुरतरः
(C) गोपालः मोहनाय चतुरतरः
(D) गोपालः मोहनात् चतुरतरः

29. (D) गोपालः मोहनात् चतुरतरः शुद्ध रूप है। तरप् प्रत्ययोगे पंचमी सूत्र से दो शब्दों में तुलना करने के लिए पंचमी विभक्ति आती है।

30. 'वे सब संस्कृत पढ़ें।' अस्य वाक्यस्य संस्कृतानुवादः अस्ति।
(A) ते संस्कृतं पठन्ति (B) ते संस्कृतं पठन्तु
(C) यूयं संस्कृतं पठथ (D) वयं संस्कृतं पठामः

30. (B) वे सब संस्कृत पढ़ें/का संस्कृतानुवाद ते संस्कृतम् पठन्तु होगा। लोट् लकार में होगा।

भाषा-II

31. 'ह' वर्णस्य उच्चारणस्थानं विद्यते–
(A) मूर्धा (B) कण्ठः
(C) तालु (D) नासिका

31. (B) अकुह विसर्जनीयानाम् कण्ठः सूत्र से ह वर्ण का उच्चारण स्थान कण्ठ है। ह ऊष्म व्यंजनों में भी आता है। ऊष्म व्यंजन चार होते हैं (शे ष स ह)।

32. 'ए' स्वरवर्णस्य उच्चारणस्थानं भवति
(A) कण्ठोष्ठम् (B) दन्तोष्ठम्
(C) कण्ठतालु (D) नासिका

32. (C) ए वर्ण का उच्चारण स्थान कण्ठतालु है। ए द्विस्थानीय वर्ण है। ए का निर्माण अ + इ से मिलकर होता है। ए को संयुक्त स्वर भी कहा जाता है। संस्कृत में संयुक्त स्वरों की संख्या चार होती है जिनमें ए ऐ ओ औ स्वर शामिल हैं।

33. मूर्धा उच्चारणस्थानं कथ्यते
(A) 'ल' वर्णस्य (B) 'र' वर्णस्य
(C) 'य' वर्णस्य (D) 'न' वर्णस्य

33. (B) ऋतुरषाणाम् मूर्धा सूत्र से ऋ ट वर्ग र और ष का उच्चारण स्थान मूर्धा होता है। र वर्ण को प्रकम्पित। लुंठित वर्ण भी कहा जाता है।

34. स्वराः कति?
(A) पञ्च (B) अष्टौ
(C) एकादश (D) नव

34. (D) माहेश्वर सूत्रानुसार स्वरों की संख्या नौ मानी गई है। संस्कृत में 5 मूल स्वर (अ,

इ, उ, ऋ, लृ) तथा संयुक्त स्वर (ए, ऐ, ओ, औ) होते हैं। स्वरों को अच् भी कहा जाता है, क्योंकि सभी स्वर अच् प्रत्याहार के अन्तर्गत आते हैं।

35. 'त्रि' शब्दस्य स्त्रीलिङ्गे प्रथमाविभक्तेः बहुवचने रूपम् भवति

(A) त्रीणि (B) तिस्रः

(C) त्रयः (D) त्रिभिः

35. (B) त्रि शब्द का प्रथमा विभक्ति बहुवचन का स्त्रीलिङ्ग का रूप त्रिस्त्रः होगा। पुल्लिंग में त्रयः तथा नपुंसक लिङ्ग में त्रीणि रूप होता है।

36. .....वेदाः सन्ति।

(A) चत्वारि (B) चतस्रः

(C) चत्वारः (D) चतुरः

36. (C) चत्वारः वेदाःसन्ति चत्वारः शब्द पुल्लिङ्ग है। जबकि चत्वारि शब्द नपुंसक लिङ्ग में प्रयोग किया जाता है। चतस्त्रः शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग किया जाता है। वेदाः शब्द पुल्लिङ्ग है इसलिए विकल्प (C) ही सही उत्तर होगा।

37. 'लता' शब्दस्य सप्तमी बहुवचने रूपं भवति

(A) लतासु (B) लताषु

(C) लतानाम् (D) लताः

37. (A) लता शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप लतासु होगा। लता आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द है। आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में मूर्धन्य में सप्तमी बहुवचन में दन्त्य स में बदल जाता है।

38. 'पितृ' शब्दस्य षष्ठी बहुवचने रूपं विद्यते

(A) पितृनाम् (B) पितृषु

(C) पितृणाम् (D) पितॄणाम्

38. (D) पितृ शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप पितॄणाम् होगा। पितृ ऋकारान्त शब्द है। इसका प्रथमा एकवचन का रूप पिता तथा तृतीया एकवचन का रूप पित्रा होता है।

39. 'अस्' धातोः लोट् लकारस्य मध्यमपुरुषैकवचने रूपमस्ति

(A) असि (B) एधि

(C) सन्तु (D) असानि

39. (B) अस् धातु लोट् लकार म.पु. एकवचन का रूप एधि होगा। असानि उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है। सन्तु लोट् लकार में प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है।

40. 'सह्' धातोः लट् लकारस्य उत्तमपुरुषैकवचने रूपं भवति

(A) सहे (B) सहते

(C) सहन्ते (D) सहसे

40. (A) सह धातु उत्तम पुरुष एक वचन का रूप सहे होता है। लट् लकार उत्तम पुरुष में रूप सहो (एव) सहाव हे (द्विव.) सहामहे (व.व.) सह धातु का अर्थ सहना (सहन करना) होता है।

41. 'कृ' धातोः लृट् लकारस्य प्रथमपुरुष बहुवचने रूपम् विद्यते

(A) अकुर्मः (B) अकरवम्

(C) अकुर्म (D) अकरोः

41. (C) कृ धातु उत्तम पुरुष बहुवचन का लङ् लकार में रूप अकुर्म होगा। जबकि अकरवम् रूप उ. पु. एक वचन का रूप होगा।

42. 'पा' धातोः लृट् लकारस्य प्रथमपुरुष बहुवचने रूपम् अस्ति

(A) पास्यन्ति (B) पास्यथः

(C) पिबिस्यन्ति (D) पास्यामः

42. (A) या धातु लृट लकार का प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप पास्यन्ति होगा। जबकि लृट् लकार में पिवन्ति होगा।

43. संस्कृते कति कारकाणि भवन्ति?

(A) सप्त (B) अष्टौ

(C) षट् (D) पञ्च

43. (C) संस्कृत में कारक छः प्रकार के होते हैं। कर्ता कर्म करणं च सम्प्रदान तथैवच अपादानोऽकरश्च मित्याहु कारकणिषट् संस्कृत में सम्बन्ध कारक तथा सम्बोधन कारक मान्य नहीं होते।

44. बालकः.....बिभेति। रिक्तस्थानं पूरयत

(A) सर्पस्य (B) सर्पात्

(C) सर्पाय (D) सर्पे

44. (B) बालकः सर्पात् विभेतिः। सर्पात् शब्द पंचमी विभक्ति एकवचन का रूप है। भीत्रार्थानाम् भय हेतु : सूत्र से भी (डरना) त्रा (रक्षा करना) के अर्थ में पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

45. राक्षसाः ..... ईर्ष्यन्ति स्म। समुचित पदेन रिक्तस्थानं पूरयतः

(A) देवानाम् (B) देवैः

(C) देवेषु (D) देवेभ्यः

45. (B) राक्षसाः देवेभ्यः ईर्ष्यन्तिष्म्। देवेभ्यः शब्द चतुर्थी बहुवचन का है। क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयानाम् यं प्रति कोपः सूत्र से चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होगा। क्रुध द्रुह ईर्ष्या असूया शब्दों के साथ चतुर्थी विभक्ति आती है।

46. गोविन्दः **शिरसा** : खल्वाटः। इत्यत्र रेखांङ्कित कारणं स्पष्टयतः

(A) करणार्थे (B) अङ्गविकारार्थे

(C) अपवर्गार्थे (D) सहार्थे

46. (B) अंगविकार के अर्थ में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। इसका सूत्र येनाङ्गविकारः होगा, शिर शब्द का तृतीया एकवचन का रूप सिरसा होता है।

47. "शक्तिम् अनतिक्रम्य" इत्यत्र समस्तपदं सूचयतः

(A) अनु शक्ति (B) उपशक्तिः

(C) यथाशक्तिम् (D) यथाशक्ति

47. (D) यथाशक्ति में अव्ययीभाव समास होता है। इसका समास विग्रह "शक्तिम् अनतिक्रम्य" होगा। अव्ययीभाव समास से बने शब्द सदैव एक वचन और नपुंसक लिङ्ग होते हैं। यह नित्य नपुंसक लिङ्गक वचनान्त समास होता है।

48. 'गोसुखम्' इत्यत्र समासः कः?

(A) कर्मधारयः (B) बहुव्रीहिः

(C) तत्पुरुषः (D) अव्ययीभावः

48. (C) गौसुखम् शब्द में तत्पुरुष समास होगा, गौभ्यः सुखम् इसका समास विग्रह है। तत्पुरुष समास में यह चतुर्थी तत्पुरुष के अन्तर्गत आता है। इसे सम्प्रदाय तत्पुरुष भी कहते हैं। रक्षित, बलि हितं, अर्थ सुख शब्दों के साथ सम्मुख में तत्पुरुष आता है।

49. 'त्रयाणां लोकानां समाहारः' समस्तपदं वर्तते

(A) त्रिलोकी (B) त्रिलोकः

(C) त्रिलोकम् (D) त्रयः लोकाः

49. (A) त्रिलोकी पद में द्विगु समास होगा। संख्या पूर्वी द्विगु सूत्र से त्रिलोकी पद में द्विगु समास है।

50. "पितरौ" इत्यत्र विग्रहः कार्यः

(A) मातृ च पितृ च (B) पिता च माता च

(C) माता च पिता च (D) मातुः च पितुः च

50. (C) पितरौ में द्वन्द्व समास है। इसमें एक शेष द्वन्द्व है इसका विग्रह माता च पिता च होगा।

51. "बालः + चलति" इत्यत्र सन्धिः करणीयः

(A) बालो चलति (B) बालश्चलति

(C) बालस्चलति (D) बालष्चलति

51. (B) श्चुत्व सन्धि के कारण क्ष् श् में बदल जाता है। जिसका शुद्ध रूप बालश्चलित होगा।

52. "प्रेजते" सन्धिविच्छेदः कार्यः

(A) प्र + ऐजते (B) प्रे + जते

(C) प्र + एजते (D) पर् + एजते

52. (C) प्रेजते पद में पर रूप सन्धि है। इसका सूत्र 'एङ् पर रूप है। प्रेजते पद का सन्धि विच्छेद (प्र + एजते) होगा। अकारान्त उपसर्ग के बाद ए ओ आता है। तब इसे पर रूप सन्धि कहा जाता है।

53. "कोऽस्ति" इत्यत्र कः सन्धिः?

(A) पूर्वरूपसन्धिः (B) पररूपसन्धिः

(C) गुणसन्धिः (D) वृद्धिसन्धिः

53. (A) कोऽस्ति पद में पूर्व रूप सन्धि है। एङ् पदादन्ति सूत्र से इस पद में पूर्व रूप सन्धि है। इसका विच्छेद को + अस्ति है।

54. "कृष्णः" सन्धिविच्छेदः करणीयः

(A) कृष् + णः (B) कृस् + नः

(C) कृष् + नः (D) कृषः + नः

54. (C) कृष्णः पद में स्टुत्व सन्धि है। इसका विच्छेद कृष् + नः होगा।

55. "संस्कृतम्" इत्यत्र कः उपसर्गः?

(A) सम् (B) सु

(C) उप (D) अव

55. (A) संस्कृतम् पद में सम् उपसर्ग है। मोऽनुस्वार सूत्र से य् अनुस्वार में बदल जाता है। कृ धातु से पूर्व सम् उपसर्ग आता है। तो क से पूर्व स् का आगम हो जाता है।

56. "पच् + क्तः" इत्यत्र प्रत्यययुक्तपदं भवति

(A) पक्तः (B) पक्वः

(C) पचितः (D) पतः

56. (B) पच् + क्तः इस पद में प्रत्यय से युक्त पद पक्वः होगा। मृ प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल की क्रिया से किया जाता है। इस प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य से होता है।

57. "उत्थाय" इत्यत्र कः प्रत्ययः?

(A) क्त्वा (B) अनीयर्

(C) ल्यप् (D) यत्

57. (C) उत्थाय पद में ल्यप् प्रत्यय हैं यह प्रत्यय उपसर्ग युक्त धातु में प्रयोग किया जाता है। यह प्रत्यय करके अर्थ में प्रयोग किया जाता है। (उद् + स्था + ल्यप्) उत्थाय पद के प्रकृति प्रत्यय होंगे।

58. .....विवादेन। रिक्तस्थानं शुद्ध अव्ययेन पूरयतः

(A) विना (B) अलम्

(C) धिक् (D) प्रति

58. (B) अलम् विवादेन सही वाक्यांश बनेगा। अलम् अव्यय पद के साथ तृतीया एवं चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

59. गुरु शिष्य से प्रश्न पूछता है। संस्कृतानुवादः करणीयः—

(A) गुरुः शिष्येण प्रश्नं पृच्छति

(B) गुरुः शिष्यात् प्रश्नं पृच्छति

(C) गुरुणा शिष्यः प्रश्नं पृच्छति

(D) गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति

59. (D) गुरुः शिष्यं प्रश्नं प्रच्छति। अकथितं च सूत्र से 16 द्विकर्मक धातुओं के साथ द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा, क्योंकि पृच्छ द्विकर्मक धातु है।

60. हम सबको सत्य बोलना चाहिए। संस्कृतानुवादः करणीयः—

(A) वयं सत्यं वदामः

(B) वयं सत्यं वदेम

(C) वयं सत्यं वदिष्यामः

(D) वयं सत्यं वदन्तु

60. (B) वयं संस्कृतं वदेम्। सही अनुवाद होगा चाहिए के अर्थ में विधिलिङ्ग लकार का प्रयोग होगा। उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप वदेम् होगा।

❑❑